सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु सन्त के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम–जनम के दुःख बिसरावै।।
अन्त काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेई सर्ब सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरू देव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धी साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

।। दोहा ।।

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

सियावर रामचन्द्रजी की जय !
उमापति महादेवजी की जय !
पवनसुत हनुमानजी की जय !

जीते जी रक्तदान मरणोपरान्त नेत्रदान